

पाठ—8 शाम एक किसान

कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

कवि ने पहाड़ को एक किसान के रूप में दिखाया है जिसने आसमान में छाए बादलों को साफे के रूप में बाँधा हुआ है।

पहाड़ के नीचे बहने वाली नदी किसान के घुटनों पर रखी चादर—सी दिख रही है।

पलाश के पेड़ पर खिले हुए लाल—लाल फूल अंगीठी में दहकते अंगारों की भाँति दिखाई देते हैं।

सूर्यास्त के कारण पूर्व दिशा में क्षितिज में गहरी लालिमा छा गई है।

पश्चिमी क्षितिज पर डूबता लाल सूरज किसान की चिलम पर सुलगते अंगारों की भाँति प्रतीत होता है।

सूर्यास्त का समय है इसलिए चारों ओर शान्ति है।

शांत वातावरण में अचानक मोर के बोलने की आवाज किसी को बुलाने का आभास करा रही है।

धीरे—धीरे चारों ओर घना अंधेरा छा गया है जैसे
किसान की चिलम उलट गई है और चारों ओर धुआँ
छा गया है।

चारों ओर अंधकार का साम्राज्य हो गया और रात हो
चुकी है।

कविता के माध्यम से कवि ने पाठकों के सामने
सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय चित्रात्मक शैली
में साकार कर प्रस्तुत किया है।